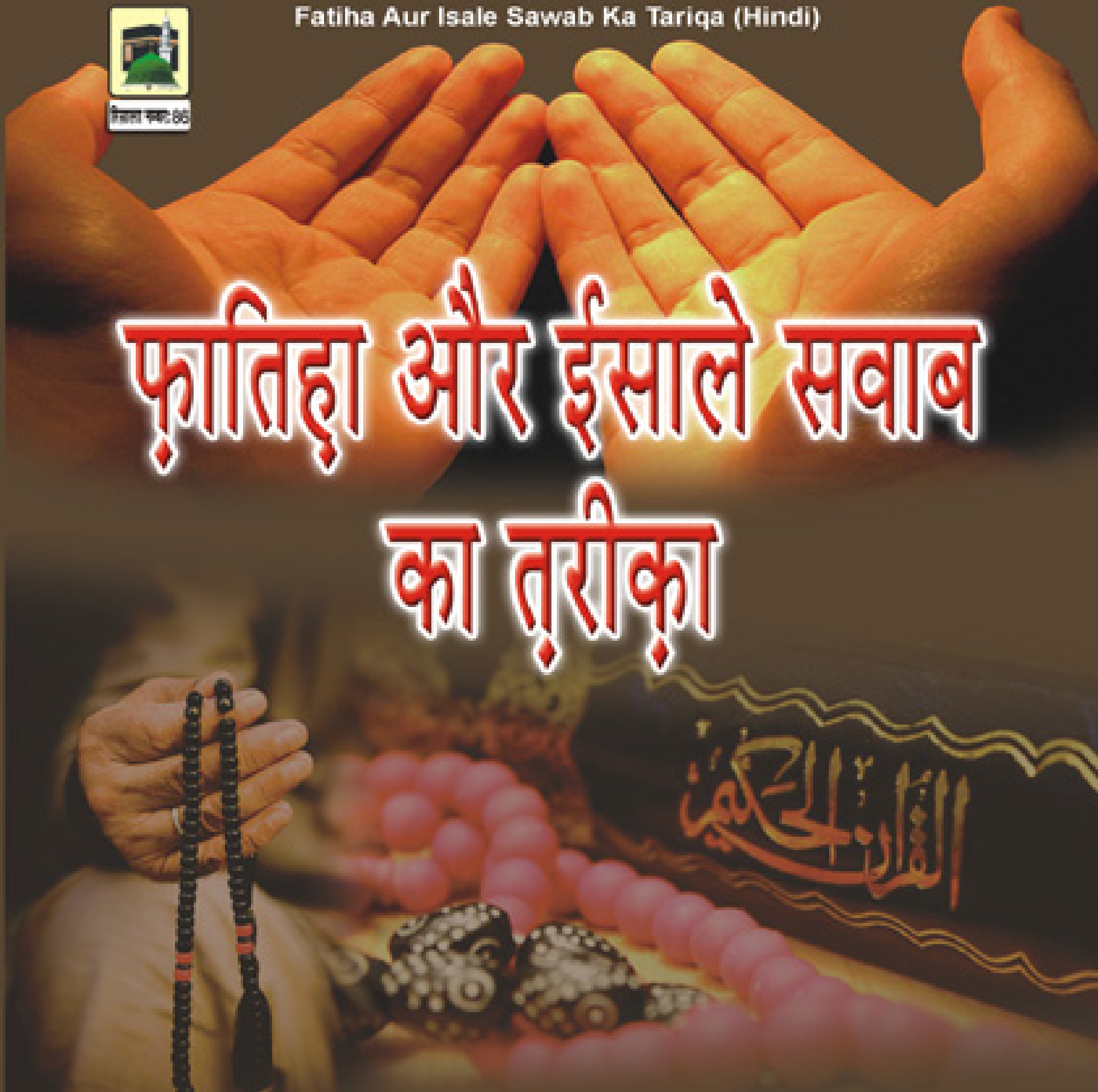
Fatiha Aur Isale Sawab Ka Tariqa (Hindi)



फ़ातिह़ा और ईसाले सवाब का त़रीक़ा

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج١ ص٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

फ़ातिह़ा और ईसाले सवाब का त़रीक़ा

येह रिसाला (**फ़ातिह़ा और ईसाले सवाब का त़रीक़ा**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

फ़ातिहा और ईसाले सवाब का त़रीक़ा

शैत़ान लाख रोके मगर येह रिसाला (28 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ कर अपनी आख़िरत का भला कीजिये ।

मर्ह़ूम रिश्तेदार को ख़्वाब में देखने का त़रीक़ा

ह़ज़रते अ़ल्लामा अबू **अ़ब्दुल्लाह** मुह़म्मद बिन अह़मद मालिकी कुरतुबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हो कर एक औ़रत ने अ़र्ज़ की : मेरी जवान बेटी फ़ौत हो गई है, कोई त़रीक़ा इर्शाद हो कि मैं उसे ख़्वाब में देख लूं । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उसे अ़मल बताया । उस ने अपनी मर्ह़ूमा बेटी को ख़्वाब में तो देखा, मगर इस ह़ाल में देखा कि **उस के बदन पर तारकोल** (या'नी डामर) **का लिबास, गरदन में ज़न्जीर और पाउं में बेड़ियां हैं !** येह **हैबत नाक** मन्ज़र देख कर वोह औ़रत कांप उठी ! उस ने दूसरे दिन ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को ख़्वाब सुनाया, सुन कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बहुत मग़मूम हुए । कुछ अ़र्से बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने

ख़्वाब में एक लड़की को देखा, जो **जन्नत** में एक तख़्त पर अपने **सर पर ताज** सजाए बैठी है । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को देख कर वोह कहने लगी : "मैं उसी ख़ातून की बेटी हूं, जिस ने आप को मेरी ह़ालत बताई थी ।" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : उस के बक़ौल तो तू अ़ज़ाब में थी, आख़िर येह इन्क़िलाब किस त़रह़ आया ? मर्हूमा बोली : क़ब्रिस्तान के क़रीब से एक शख़्स गुज़रा और उस ने मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत, मम्बए जूदो सख़ावत, सरापा फ़ज़्लो रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजा, उस के **दुरूद शरीफ़ पढ़ने की ब-र-कत से अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने हम 560 क़ब्र वालों से अ़ज़ाब उठा लिया ।** (التذكرة فى احوال الموتٰى واُمور الآخرة ج١ ص٧٤ ماخوذاً) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि पहले के मुसल्मानों का बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن की त़रफ़ ख़ूब रुजूअ़ था, उन की ब-र-कतों से लोगों के काम भी बन जाया करते थे, येह भी मा'लूम हुवा कि मर्हूम अ़ज़ीज़ों को ख़्वाब में देखने का मुत़ा-लबा करने में सख़्त इम्तिह़ान भी है कि अगर मर्हूम को अ़ज़ाब में देख लिया तो परेशानी का सामना होगा। इस **ह़िकायत** से **ईसाले सवाब** की ज़बर दस्त ब-र-कत भी जानने को मिली और येह भी पता चला कि सिर्फ़ **एक बार दुरूद**

शरीफ़ पढ़ कर भी ईसाले सवाब किया जा सकता है । **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बे पायां रह़मतों के भी क्या कहने ! कि अगर वोह एक दुरूद शरीफ़ ही को क़बूल फ़रमा ले तो उस के **ईसाले सवाब** की ब-र-कत से सारे के सारे क़ब्रिस्तान वालों पर भी अगर अ़ज़ाब हो तो उठा ले और उन सब को इन्आ़मो इक्राम से मालामाल फ़रमा दे ।

लाज रख ले गुनाहगारों की नाम रह़मान है तेरा या रब !
बे सबब बख़्श दे न पूछ अ़मल नाम ग़फ़्फ़ार है तेरा या रब !
तू करीम और करीम भी ऐसा
कि नहीं जिस का दूसरा या रब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिन के वालिदैन या उन में कोई एक फ़ौत हो गया हो तो उन को चाहिये कि उन की त़रफ़ से ग़फ़्लत न करें, उन की क़ब्रों पर ह़ाज़िरी भी देते रहें और **ईसाले सवाब** भी करते रहें । इस ज़िम्न में **5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

﴾1﴿ मक़्बूल ह़ज का सवाब

जो ब निय्यते सवाब अपने वालिदैन दोनों या एक की **क़ब्र** की ज़ियारत करे, **ह़ज्जे मक़्बूल** के बराबर सवाब पाए और जो ब कसरत इन की **क़ब्र** की ज़ियारत करता हो, फ़िरिश्ते उस की **क़ब्र** की (या'नी जब येह फ़ौत होगा) ज़ियारत को आएं । (نَوادِرُ الاصُول للحکیم الترمذی ج۱ ص۷۳ حدیث۹۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

﴾2﴿ दस ह़ज का सवाब

जो अपनी मां या बाप की त़रफ़ से **ह़ज** करे उन (या'नी मां या बाप) की त़रफ़ से ह़ज अदा हो जाए, इसे (या'नी ह़ज करने वाले को) मज़ीद **दस ह़ज का सवाब** मिले। (دارقطنی ج۲ص۳۲۹حدیث۲۵۸۷)

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! जब कभी **नफ़्ली ह़ज** की सआदत ह़ासिल हो तो फ़ौत शुदा मां या बाप की निय्यत कर लीजिये ताकि उन को भी ह़ज का सवाब मिले, आप का भी ह़ज हो जाए बल्कि मज़ीद **दस ह़ज** का सवाब हाथ आए। अगर मां बाप में से कोई इस ह़ाल में फ़ौत हो गया कि उन पर ह़ज फ़र्ज़ हो चुकने के बा वुजूद वोह न कर पाए थे तो अब औलाद को **ह़ज्जे बदल** का शरफ़ ह़ासिल करना चाहिये। ''ह़ज्जे बदल'' के तफ़्सीली अह़काम के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ किताब **''रफ़ीक़ुल ह़-रमैन''** का सफ़ह़ा 208 ता 214 का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये।

﴾3﴿ वालिदैन की त़रफ़ से ख़ैरात

जब तुम में से कोई कुछ नफ़्ल ख़ैरात करे तो चाहिये कि उसे अपने मां बाप की त़रफ़ से करे कि इस का सवाब उन्हें मिलेगा और इस के (या'नी ख़ैरात करने वाले के) सवाब में कोई कमी भी नहीं आएगी।

(شُعَبُ الْاِیْمَان ج٦ ص۲۰۵ حدیث۷۹۱۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾4﴿ रोज़ी में बे ब-र-कती की वजह

बन्दा जब मां बाप के लिये दुआ़ तर्क कर देता है उस का रिज़्क़ क़त़्अ़ हो जाता है। (جَمعُ الجَوامِع ج۱ص۲۹۲حدیث۲۱۳۸)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (مجمع الزوائد)

﴾5﴿ जुमुआ़ को ज़ियारते क़ब्र की फ़ज़ीलत

जो शख़्स **जुमुआ़** के रोज़ अपने **वालिदैन** या इन में से किसी एक की **क़ब्र** की ज़ियारत करे और उस के पास **सूरए यासीन** पढ़े बख़्श दिया जाए । **(اَلْكَامِل لابن عَدِی ج٦ ص٢٦٠)**

लाज रख ले गुनाहगारों की नाम रह़मान है तेरा या रब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कफ़न फट गए !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बड़ी है, जो मुसल्मान दुन्या से रुख़्सत हो जाते हैं उन के लिये भी उस ने अपने फ़ज़्लो करम के दरवाज़े खुले ही रखे हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मते बे पायां से मु-तअ़ल्लिक़ एक **ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत** पढ़िये और झूमिये ! चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ह़ज़रते सय्यिदुना अरमिया عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام कुछ ऐसी क़ब्रों के पास से गुज़रे जिन में अ़ज़ाब हो रहा था। एक साल बा'द जब फिर वहीं से गुज़र हुवा तो अ़ज़ाब ख़त्म हो चुका था। आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की **: या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** क्या वजह है कि पहले इन को अ़ज़ाब हो रहा था अब ख़त्म हो गया ? आवाज़ आई **: "ऐ अरमिया !** इन के **कफ़न फट गए,** बाल बिखर गए और क़ब्रें मिट गईं तो मैं ने इन पर रह़्म किया और ऐसे लोगों पर मैं रह़्म किया ही करता हूं।" **(شَرحُ الصُّدُور لِلسُّيُوطی ص ٣١٣)**

अल्लाह की रह़मत से तो जन्नत ही मिलेगी
ऐ काश ! मह़ल्ले में जगह उन के मिली हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 193)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"करम" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से ईसाले सवाब के 3 ईमान अफ़्रोज़ फ़ज़ाइल

(1) दुआ़ओं की ब-र-कत

मदीने के सुल्त़ान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : मेरी उम्मत गुनाह समेत **क़ब्र** में दाख़िल होगी और जब निकलेगी तो बे गुनाह होगी क्यूं कि वोह मुअमिनीन की दुआ़ओं से बख़्श दी जाती है ।

(اَلْمُعْجَمُ الْاَ وْسَط ج١ص٥٠٩حديث١٨٧٩)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(2) ईसाले सवाब का इन्तिज़ार !

सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुश्कबार है : मुर्दे का ह़ाल क़ब्र में डूबते हुए इन्सान की मानिन्द है कि वोह शिद्दत से इन्तिज़ार करता है कि बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की दुआ़ इस को पहुंचे और जब किसी की दुआ़ उसे पहुंचती है तो उस के नज़्दीक वोह दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और इस में जो कुछ है) से बेहतर होती है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ब्र वालों को उन के ज़िन्दा **मु-तअ़ल्लिक़ीन** की त़रफ़ से हदिय्या किया हुवा सवाब पहाड़ों की मानिन्द अ़त़ा फ़रमाता है, ज़िन्दों का हदिय्या (या'नी तोहफ़ा) मुर्दों के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करना है ।

(شُعَبُ الْاِيْمَان ج٦ص٢٠٣حديث٧٩٠٥)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा । (کنز العمال)

रूहें घरों पर आ कर ईसाले सवाब का मुत़ा-लबा करती हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा मरने वाले अपनी क़ब्रों पर आने जाने वालों को पहचानते हैं और उन्हें ज़िन्दों की **दुआ़ओं** से फ़ाएदा पहुंचता है, जब ज़िन्दा लोगों की त़रफ़ से **ईसाले सवाब** के तोह़फ़े आना बन्द होते हैं, तो उन को आगाही ह़ासिल हो जाती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें इजाज़त देता है तो घरों पर जा कर ईसाले सवाब का मुत़ा-लबा भी करते हैं । **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या (मुख़र्रजा)** जिल्द 9 **सफ़ह़ा** 650 पर नक़्ल करते हैं **:** ''ग़राइब'' और ''ख़ज़ाना'' में मन्क़ूल है कि **मुअमिनीन की रूहें हर शबे जुमुआ़** (या'नी जुमा'रात और जुमुआ़ की दरमियानी रात) **रोज़े ईद, रोज़े आ़शूरा और शबे बराअत को अपने घर आ कर बाहर खड़ी रहती हैं** और हर रूह़ ग़मनाक बुलन्द आवाज़ से निदा करती (या'नी पुकार कर कहती) है कि ऐ मेरे घर वालो ! ऐ मेरी औलाद ! ऐ मेरे क़राबत दारो ! (हमारे ईसाले सवाब की निय्यत से) स-दक़ा (ख़ैरात) कर के हम पर मेहरबानी करो ।

है कौन कि गिर्या करे या फ़ातिह़ा को आए
बेकस के उठाए तेरी रह़मत के भरन फूल

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(3) दूसरों के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करने की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो कोई तमाम मोमिन

मर्दों और औ़रतों के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये हर मोमिन मर्द व औ़रत के इ़वज़ एक नेकी लिख देता है ।

(مسندُ الشّامیین لِلطَّبَرانی ج۳ص۲۳٤حدیث ۲۱۵۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अरबों नेकियां कमाने का आसान नुस्ख़ा मिल गया !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! झूम जाइये ! अरबों, खरबों नेकियां कमाने का **आसान नुस्ख़ा** हाथ आ गया ! ज़ाहिर है इस वक़्त रूए ज़मीन पर करोड़ों मुसल्मान मौजूद हैं और करोड़ों बल्कि अरबों दुन्या से चल बसे हैं । अगर हम सारी उम्मत की मग़्फ़िरत के लिये दुआ़ करेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हमें अरबों, खरबों नेकियों का ख़ज़ाना मिल जाएगा । मैं अपने लिये और तमाम मुअमिनीन व मुअमिनात के लिये दुआ़ तह़रीर कर देता हूं । (अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये) اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ढेरों नेकियां हाथ आएंगी । اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ وَلِكُلِّ مُؤْمِنٍ وَّمُؤْمِنَةٍ

या'नी ऐ **अल्लाह** ! मेरी और हर मोमिन व मोमिना की मग़्फ़िरत फ़रमा । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِیِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

आप भी ऊपर दी हुई दुआ़ को अ़-रबी या उर्दू या दोनों ज़बानों में अभी और हो सके तो रोज़ाना पांचों नमाज़ों के बा'द भी पढ़ने की आ़दत बना लीजिये ।

बे सबब बख़्श दे न पूछ अ़मल
नाम ग़फ़्फ़ार है तेरा या रब !

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नूरानी लिबास

एक बुज़ुर्ग ने अपने मर्हूम भाई को ख़्वाब में देख कर पूछा : क्या ज़िन्दा लोगों की दुआ़ तुम लोगों को पहुंचती है ? मर्हूम ने जवाब दिया : ''हां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह नूरानी लिबास की सूरत में आती है उसे हम पहन लेते हैं ।'' (شَرحُ الصُّدُوْرص ۳۰۵)

जल्वए यार से हो क़ब्र आबाद   वह्शते क़ब्र से बचा या रब !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नूरानी त़बाक़

मन्क़ूल है : जब कोई शख़्स मय्यित को **ईसाले सवाब** करता है तो ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام उसे **नूरानी त़बाक़** में रख कर **क़ब्र** के कनारे खड़े हो जाते हैं और कहते हैं : ''**ऐ क़ब्र वाले !** येह हदिय्या (या'नी तोह़फ़ा) तेरे घर वालों ने भेजा है क़बूल कर ।'' येह सुन कर वोह ख़ुश होता है और उस के पड़ोसी अपनी मह़रूमी पर ग़मगीन होते हैं । (اَیضاًص۳۰۸)

क़ब्र में आह ! घुप अंधेरा है

फ़ज़्ल से कर दे चांदना या रब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 88)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुर्दों की ता'दाद के बराबर अज्र

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : **जो** क़ब्रिस्तान में ग्यारह

बार **सू-रतुल इख़्लास** पढ़ कर मुर्दों को इस का **ईसाले सवाब** करे तो मुर्दों की ता'दाद के बराबर ईसाले सवाब करने वाले को इस का अज्र मिलेगा।

(جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطی ج۷ ص۲۸۵ حدیث۲۳۱۵۲)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सब क़ब्र वालों को सिफ़ारिशी बनाने का अ़मल

सुल्त़ाने दो जहान, शफ़ीए़ मुजरिमान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : "जो शख़्स क़ब्रिस्तान में दाख़िल हुवा फिर उस ने **सू-रतुल फ़ातिह़ा, सू-रतुल इख़्लास** और **सू-रतुत्तकासुर** पढ़ी फिर येह दुआ़ मांगी : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने जो कुछ क़ुरआन पढ़ा उस का सवाब इस क़ब्रिस्तान के मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को पहुंचा। तो वोह सब के सब क़ियामत के रोज़ इस (या'नी ईसाले सवाब करने वाले) के **सिफ़ारिशी** होंगे।" (شَرْحُ الصُّدُور ص۳۱۱)

हर भले की भलाई का सदक़ा
इस बुरे को भी कर भला या रब

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सूरए इख़्लास के ईसाले सवाब की ह़िकायत

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मैं एक रात **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا के क़ब्रिस्तान में सो गया। क्या देखता हूं कि क़ब्र वाले ह़ल्क़ा दर ह़ल्क़ा खड़े हैं, मैं ने उन से इस्तिफ़्सार किया (या'नी पूछा) : क्या क़ियामत क़ाइम हो गई ? उन्हों ने कहा : नहीं, बात दर अस्ल येह है कि एक

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है । (ترغیب وترہیب)

मुसल्मान भाई ने **सू-रतुल इख़्लास** पढ़ कर हम को **ईसाले सवाब** किया तो वोह सवाब हम एक साल से तक़्सीम कर रहे हैं। (شَرحُ الصُّدُوْر ص۳۱۲)

तूने जब से सुना दिया या रब ! سَبَقَتْ رَحْمَتِیْ عَلٰی غَضَبِیْ
आसरा हम गुनाहगारों का और मज़बूत़ हो गया या रब !

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

उम्मे सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के लिये कूंआं

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी मां इन्तिक़ाल कर गई हैं (मैं उन की त़रफ़ से स-दक़ा (या'नी ख़ैरात) करना चाहता हूं) कौन सा स-दक़ा अफ़्ज़ल रहेगा ? सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''पानी।'' चुनान्चे उन्हों ने एक कूंआं खुदवाया और कहा : **هٰذِہ لِاُمِّ سَعْد** या'नी **''येह उम्मे सा'द** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا **के लिये है।''**

(اَبوداوٗد ج۲ص ۱۸۰حدیث۱۶۸۱)

ग़ौस पाक का बकरा कहना कैसा ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के इस इर्शाद : **''येह उम्मे सा'द** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) **के लिये है''** के मा'ना येह हैं कि येह कूंआं सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की मां के **ईसाले सवाब** के लिये है। इस से येह भी मा'लूम हुवा कि मुसल्मानों का गाय या बकरे वग़ैरा को बुज़ुर्गों की त़रफ़ मन्सूब करना म-सलन येह कहना कि ''येह **सय्यिदुना ग़ौसे पाक** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه **का बकरा है''**

इस में कोई ह़रज नहीं कि इस से मुराद भी येही है कि येह बकरा ग़ौसे पाक عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّزَّاق के **ईसाले सवाब** के लिये है । क़ुरबानी के जानवर को भी तो लोग एक दूसरे ही की त़रफ़ मन्सूब करते हैं, म-सलन कोई अपनी क़ुरबानी का बकरा लिये चला आ रहा हो और अगर आप उस से पूछें कि किस का बकरा है ? तो उस ने कुछ इस त़रह़ जवाब देना है, ''मेरा बकरा है'' या ''मेरे मामूं का बकरा है।'' जब येह कहने वाले पर ए'तिराज़ नहीं तो ''ग़ौसे पाक का बकरा'' कहने वाले पर भी कोई ए'तिराज़ नहीं हो सकता । ह़क़ीक़त में हर शै का मालिक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही है और क़ुरबानी का बकरा हो या ग़ौसे पाक का बकरा, ज़ब्ह़ के वक़्त हर ज़बीह़ा पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ही नाम लिया जाता है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वस्वसों से नजात बख़्शे ।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

''अल्लाह की रह़मत के क्या कहने !'' के उन्नीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से ईसाले सवाब के 19 म-दनी फूल

﴾1﴿ ईसाले सवाब के लफ़्ज़ी मा'ना हैं : ''सवाब पहुंचाना'' इस को ''सवाब बख़्शना'' भी कहते हैं मगर बुज़ुर्गों के लिये ''सवाब बख़्शना'' कहना मुनासिब नहीं, ''सवाब नज़्र करना'' कहना अदब के ज़ियादा क़रीब है । **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ह़ुज़ूरे अक़्दस عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ख़्वाह और नबी या वली को ''सवाब बख़्शना'' कहना बे अ-दबी है बख़्शना बड़े की त़रफ़ से छोटे को होता है बल्कि नज़्र करना या हदिय्या करना कहे । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 26, स. 609)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (کنزالعمال)

《2》 **फ़र्ज़ ,** वाजिब, सुन्नत, नफ़्ल, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, ह़ज, तिलावत, ना'त शरीफ़, **ज़िक्रुल्लाह**, दुरूद शरीफ़, बयान, दर्स, म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र, म-दनी इन्आ़मात, अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत, दीनी किताब का मुत़ा-लआ़, म-दनी कामों के लिये इन्फ़िरादी कोशिश वग़ैरा हर नेक काम का **ईसाले सवाब** कर सकते हैं।

《3》 **मय्यित** का तीजा, दसवां, चालीसवां और बरसी करना बहुत अच्छे काम हैं कि येह **ईसाले सवाब** के ही ज़राएअ़ हैं। शरीअ़त में तीजे वग़ैरा के अ़-दमे जवाज़ (या'नी ना जाइज़ होने) की दलील न होना ख़ुद दलीले जवाज़ है और मय्यित के लिये ज़िन्दों का दुआ़ करना क़ुरआने करीम से साबित है जो कि "ईसाले सवाब" की अस्ल है। चुनान्चे पारह 28 **सू-रतुल ह़श्र** आयत 10 में इर्शादे रब्बुल इबाद है :

وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो उन के बा'द आए अ़र्ज़ करते हैं : ऐ हमारे रब (عَزَّوَجَلَّ) ! हमें बख़्श दे और हमारे भाइयों को जो हम से पहले ईमान लाए।

《4》 **तीजे** वग़ैरा का खाना सिर्फ़ इसी सूरत में मय्यित के छोड़े हुए माल से कर सकते हैं जब कि सारे वु-रसा बालिग़ हों और सब के सब इजाज़त भी दें अगर एक भी वारिस ना बालिग़ है तो **सख़्त ह़राम** है। हां बालिग़ अपने ह़िस्से से कर सकता है।

(मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 4, स. 822)

《5》 तीजे का खाना चूंकि उ़मूमन दा'वत की सूरत में होता है इस लिये

अग़्निया के लिये जाइज़ नहीं सिर्फ़ गु-रबा व मसाकीन खाएं, तीन दिन के बा'द भी मय्यित के खाने से अग़्निया (या'नी जो फ़क़ीर न हों उन) को बचना चाहिये। फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 9 सफ़हा 667 से मय्यित के खाने से मु-तअ़ल्लिक़ एक मुफ़ीद सुवाल जवाब मुला-हज़ा हों, **सुवाल :** मक़ूला **طَعَامُ الْمَيِّتِ يُمِيْتُ الْقَلْب** (मय्यित का खाना दिल को मुर्दा कर देता है।) मुस्तनद क़ौल है, अगर मुस्तनद क़ौल है तो इस के क्या मा'ना हैं ? **जवाब :** येह तजरिबे की बात है और इस के मा'ना येह हैं कि जो त़आमे मय्यित के मु-तमन्नी रहते हैं उन का दिल मर जाता है, ज़िक्र व त़ाअ़ते इलाही के लिये ह़यात व चुस्ती उस में नहीं कि वोह अपने पेट के लुक़्मे के लिये मौते मुस्लिमीन के मुन्तज़िर रहते हैं और खाना खाते वक़्त मौत से ग़ाफ़िल और उस की लज़्ज़त में शाग़िल। وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 667)

﴿6﴾ **मय्यित** के घर वाले अगर **तीजे** का खाना पकाएं तो (मालदार न खाएं) सिर्फ़ फु-क़रा को खिलाएं जैसा कि मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़हा 853 पर है : मय्यित के घर वाले **तीजे** वग़ैरा के दिन दा'वत करें तो ना जाइज़ व बिद्अ़ते **क़बीहा** है कि दा'वत तो ख़ुशी के वक़्त मश्रूअ़ (या'नी शर-अ़ के मुवाफ़िक़) है न कि ग़म के वक़्त और अगर फु-क़रा को खिलाएं तो बेहतर है। (ऐज़न, स. 853)

﴿7﴾ आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "यूंही चेहलुम या बरसी या शश्माही पर खाना बे निय्यते ईसाले सवाब मह़ज़ एक रस्मी त़ौर पर पकाते और "शादियों की भाजी" की त़रह़ बरादरी में बांटते हैं, वोह भी बे अस्ल है, जिस से एह़तिराज़ (या'नी एह़तियात़ करनी)

चाहिये ।" (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 671) बल्कि येह खाना **ईसाले सवाब** और दीगर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ होना चाहिये और अगर कोई ईसाले सवाब के लिये खाने का एहतिमाम न भी करे तब भी कोई ह़रज नहीं ।

﴾8﴿ **एक** दिन के बच्चे को भी **ईसाले सवाब** कर सकते हैं, उस का **तीजा** वग़ैरा भी करने में ह़रज नहीं। और **जो** ज़िन्दा हैं उन को भी **ईसाले सवाब** किया जा सकता है ।

﴾9﴿ अम्बिया व मुर-सलीन عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْم और फ़िरिश्तों और मुसल्मान जिन्नात को भी **ईसाले सवाब** कर सकते हैं ।

﴾10﴿ **ग्यारहवीं शरीफ़** और र-जबी शरीफ़ (या'नी 22 र-जबुल मुरज्जब को सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के कूंडे करना) वग़ैरा जाइज़ है। कूंडे ही में खीर खिलाना ज़रूरी नहीं दूसरे बरतन में भी खिला सकते हैं, इस को घर से बाहर भी ले जा सकते हैं, इस मौक़अ़ पर जो "कहानी" पढ़ी जाती है वोह बे अस्ल है, **यासीन** शरीफ़ पढ़ कर **10 क़ुरआने करीम** ख़त्म करने का सवाब कमाइये और कूंडों के साथ साथ इस का भी ईसाले सवाब कर दीजिये ।

﴾11﴿ **दास्ताने** अ़जीब, शहज़ादे का सर, दस बीबियों की कहानी और जनाबे सय्यिदह की कहानी वग़ैरा सब मन घड़त क़िस्से हैं, इन्हें हरगिज़ न पढ़ा करें । इसी त़रह़ एक पेम्फ़लेट बनाम "वसिय्यत नामा" लोग तक़्सीम करते हैं जिस में किसी "शैख़ अह़मद" का ख़्वाब दर्ज है येह भी **जा'ली** (या'नी नक़्ली) है इस के नीचे मख़्सूस ता'दाद में छपवा कर

बांटने की फ़ज़ीलत और न तक़्सीम करने के नुक़्सानात वग़ैरा लिखे हैं उन का भी ए'तिबार मत कीजिये।

﴾12﴿ औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की फ़ातिह़ा के खाने को ता'ज़ीमन "नज़्रो नियाज़" कहते हैं और येह **तबर्रुक** है, इसे अमीर व ग़रीब सब खा सकते हैं।

﴾13﴿ **नियाज़ और ईसाले सवाब** के खाने पर फ़ातिह़ा पढ़ाने के लिये किसी को बुलवाना या बाहर के मेहमान को खिलाना शर्त़ नहीं, घर के अफ़राद अगर खुद ही फ़ातिह़ा पढ़ कर खा लें जब भी कोई ह़रज नहीं।

﴾14﴿ **रोज़ाना** जितनी बार भी खाना ह़स्बे ह़ाल अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ खाएं, उस में अगर किसी न किसी बुज़ुर्ग के **ईसाले सवाब** की निय्यत कर लें तो ख़ूब है। म-सलन नाश्ते में निय्यत कीजिये : आज के नाश्ते का सवाब सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के ज़रीए तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को पहुंचे। दो पहर को निय्यत कीजिये : अभी जो खाना खाएंगे (या खाया) उस का **सवाब सरकारे ग़ौसे आ'ज़म** और तमाम औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام को पहुंचे, रात को निय्यत कीजिये : अभी जो खाएंगे उस का सवाब इमामे अहले सुन्नत **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن और हर मुसल्मान मर्द व औरत को पहुंचे या हर बार सभी को ईसाले सवाब किया जाए और येही **अन्सब** (या'नी ज़ियादा मुनासिब) है। याद रहे ! ईसाले सवाब सिर्फ़ उसी सूरत में हो सकेगा जब कि वोह खाना किसी अच्छी निय्यत से खाया जाए म-सलन इ़बादत पर कुव्वत ह़ासिल करने की निय्यत से खाया तो येह खाना खाना

कारे सवाब हुवा और उस का ईसाले सवाब हो सकता है। अगर एक भी अच्छी निय्यत न हो तो खाना खाना मुबाह़ कि इस पर न सवाब न गुनाह, तो जब सवाब ही न मिला तो ईसाले सवाब कैसा ! अलबत्ता दूसरों को ब निय्यते सवाब खिलाया हो तो उस खिलाने का सवाब ईसाल हो सकता है।

《15》 अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ खाए जाने वाले खाने से पहले **ईसाले सवाब** करें या खाने के बा'द, दोनों त़रह़ दुरुस्त है।

《16》 **हो** सके तो हर रोज़ (नफ़्अ़ पर नहीं बल्कि) अपनी बिक्री (Sale) का चौथाई फ़ीसद (या'नी चार सो रुपै पर एक रुपिया) और मुला-ज़मत करने वाले तन-ख़्वाह का माहाना कम अज़ कम एक फ़ीसद सरकारे **ग़ौसे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की नियाज़ के लिये निकाल लिया करें, **ईसाले सवाब** की निय्यत से इस रक़म से दीनी किताबें तक़्सीम करें या किसी भी नेक काम में ख़र्च करें اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कतें ख़ुद ही देख लेंगे।

《17》 **मस्जिद** या मद्रसे का क़ियाम स-द-क़ए जारिय्या और **ईसाले सवाब** का बेहतरीन ज़रीआ़ है।

《18》 **जितनों** को भी ईसाले सवाब करें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से उम्मीद है कि सब को पूरा मिलेगा, येह नहीं कि सवाब तक़्सीम हो कर टुकड़े टुकड़े मिले। **ईसाले सवाब** करने वाले के सवाब में कोई कमी वाक़ेअ़ नहीं होती बल्कि येह उम्मीद है कि उस ने जितनों को ईसाले सवाब किया उन सब के मज्मूए़ के बराबर (ईसाले सवाब करने वाले) को सवाब मिले। म-सलन कोई नेक काम किया जिस पर

इस को दस नेकियां मिलीं अब इस ने दस मुर्दों को **ईसाले सवाब** किया तो हर एक को दस दस नेकियां पहुंचेंगी जब कि ईसाले सवाब करने वाले को एक सो दस और अगर एक हज़ार को ईसाले सवाब किया तो इस को दस हज़ार दस। وَعَلٰى هٰذَا الْقِيَاس- (और इसी क़ियास पर)

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, हि़स्सा : 4, स. 850)

﴾19﴿ **ईसाले सवाब** सिर्फ़ मुसल्मान को कर सकते हैं। काफ़िर या मुरतद को ईसाले सवाब करना या उस को "मर्हूम", जन्नती, खुल्द आशियां, बेंकठ बासी, स्वर्ग बासी कहना **कुफ़्र** है।

ईसाले सवाब का त़रीक़ा

ईसाले सवाब (या'नी सवाब पहुंचाने) के लिये दिल में निय्यत कर लेना काफ़ी है, म-सलन आप ने किसी को एक रुपिया ख़ैरात दिया या एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ा या किसी को एक सुन्नत बताई या किसी पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए नेकी की दा'वत दी या सुन्नतों भरा बयान किया। अल ग़रज़ कोई भी नेक काम किया आप दिल ही दिल में इस त़रह़ निय्यत कर लीजिये म-सलन : "अभी मैं ने जो **सुन्नत** बताई इस का सवाब सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पहुंचे।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सवाब पहुंच जाएगा। मज़ीद जिन जिन की निय्यत करेंगे उन को भी पहुंचेगा। दिल में निय्यत होने के साथ साथ ज़बान से कह लेना भी अच्छा है कि येह सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से साबित है जैसा कि ह़दीसे सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ में गुज़रा कि उन्हों ने कूंआं खुदवा कर फ़रमाया **هٰذِهٖ لِاُمِّ سَعد** या'नी **"येह उम्मे सा'द के लिये है।"**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (طبرانی)

ईसाले सवाब का मुरव्वजा त़रीक़ा

आज कल मुसल्मानों में ख़ुसूसन खाने पर जो **फ़ातिहा का त़रीक़ा** राइज है वोह भी बहुत अच्छा है । जिन खानों का **ईसाले सवाब** करना है वोह सारे या सब में से थोड़ा थोड़ा खाना नीज़ एक गिलास में पानी भर कर सब कुछ सामने रख लीजिये ।

अब :

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ

पढ़ कर एक बार :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ﴿۱﴾ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ﴿۲﴾ وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۚ﴿۳﴾ وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ﴿۴﴾ وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ؕ﴿۵﴾ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ﴿۶﴾

तीन बार :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ۬ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ﴿۳﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿۴﴾

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

एक बार :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ ۙ﴿۱﴾ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿۲﴾ وَ مِنۡ شَرِّ
غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾ وَ مِنۡ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الۡعُقَدِ ۙ﴿۴﴾ وَ مِنۡ
شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾

एक बार :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِکِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰہِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾
مِنۡ شَرِّ الۡوَسۡوَاسِ ۬ۙ الۡخَنَّاسِ ۪ۙ﴿۴﴾ الَّذِیۡ یُوَسۡوِسُ فِیۡ
صُدُوۡرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾ مِنَ الۡجِنَّۃِ وَ النَّاسِ ﴿۶﴾

एक बार :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۙ﴿۱﴾ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۙ﴿۲﴾ مٰلِکِ
یَوۡمِ الدِّیۡنِ ؕ﴿۳﴾ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ؕ﴿۴﴾ اِہۡدِنَا
الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۙ﴿۵﴾ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ ۙ۬

غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ﴿۷﴾

एक बार :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

الٓمّٓ ﴿۱﴾ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛۚ فِيْهِ ۛۚ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۲﴾
الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ
يُنْفِقُوْنَ ﴿۳﴾ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ
مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿۴﴾ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى
مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵﴾

पढ़ने के बा'द येह पांच आयात पढ़िये :

﴿1﴾ وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶۳﴾

(پ۲، البقرة:۱۶۳)

﴿2﴾ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۶﴾

(پ۸، الاعراف:۵۶)

﴿3﴾ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۷﴾ (پ۱۷ الانبیاء:۱۰۷)

﴿4﴾ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ

اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿۴۰﴾

(پ۲۲، الاحزاب:۴۰)

﴾5﴿ اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۵۶﴾ (پ۲۲، الاحزاب:۵۶)

अब दुरूद शरीफ़ पढ़िये :

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
صَلٰوةً وَّسَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه

इस के बा'द येह आयात पढ़िये :

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ ج وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۸۱﴾ ج وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۸۲﴾

(پ۲۳، الصّٰفّٰت:۱۸۰-۱۸۲)

अब फ़ातिह़ा पढ़ाने वाला हाथ उठा कर बुलन्द आवाज़ से "अल फ़ातिह़ा" कहे। सब लोग आहिस्ता से या'नी इतनी आवाज़ से कि सिर्फ़ खुद सुनें **सू-रतुल फ़ातिह़ा** पढ़ें। अब फ़ातिह़ा पढ़ाने वाला इस त़रह़ ए'लान करे : "**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आप ने जो कुछ पढ़ा है उस का सवाब मुझे दे दीजिये।" तमाम ह़ाज़िरीन कह दें : "आप को दिया।" अब फ़ातिह़ा पढ़ाने वाला **ईसाले सवाब** कर दे।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سُنّی)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का फ़ातिह़ा का त़रीक़ा

ईसाले सवाब के अल्फ़ाज़ लिखने से क़ब्ल इमामे अहले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُالرَّحْمٰن फ़ातिह़ा से क़ब्ल जो सूरतें वग़ैरा पढ़ते थे वोह भी तह़रीर की जाती हैं :

एक बार :

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ﴿۲﴾ مٰلِكِ یَوْمِ الدِّیْنِ ﴿۳﴾ اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُ ﴿۴﴾ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ ﴿۵﴾ صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْهِمْ ۙ۬ غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّیْنَ ﴿۷﴾

एक बार :

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۬ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ ۚ وَ لَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ ۚ وَ لَا یَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ

وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿٢٥٥﴾ (پ۳، البقرة:۲۵۵)

तीन बार :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ﴿١﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ﴿٢﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ﴿٣﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿٤﴾

ईसाले सवाब के लिये दुआ का त़रीक़ा

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **!** जो कुछ पढ़ा गया (अगर खाना वग़ैरा है तो इस त़रह़ से भी कहिये) और जो कुछ खाना वग़ैरा पेश किया गया है उस का सवाब हमारे नाक़िस अ़मल के लाइक़ नहीं बल्कि अपने करम के शायाने शान मर्ह़मत फ़रमा । और इसे हमारी जानिब से अपने प्यारे मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में नज़्र पहुंचा । सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवस्सुत़ से तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तमाम औलियाए इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की जनाब में नज़्र पहुंचा । सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवस्सुत़ से सय्यिदुना **आदम सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ले कर अब तक जितने इन्सान व जिन्नात **मुसल्मान** हुए या क़ियामत तक होंगे सब को पहुंचा । इस दौरान बेहतर येह है कि जिन जिन बुज़ुर्गों को ख़ुसूसन ईसाले सवाब करना है उन का नाम भी लेते जाइये । अपने मां बाप और दीगर रिश्तेदारों

और अपने पीरो मुर्शिद को भी नाम ब नाम **ईसाले सवाब** कीजिये । (फ़ौत शु–दगान में से जिन जिन का नाम लेते हैं उन को ख़ुशी ह़ासिल होती है अगर किसी का भी नाम न लें सिर्फ़ इतना ही कह लें कि **या अल्लाह !** इस का सवाब आज तक जितने भी अहले ईमान हुए उन सब को पहुंचा तब भी हर एक को पहुंच जाएगा । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ)

अब ह़स्बे मा'मूल दुआ़ ख़त्म कर दीजिये । (अगर थोड़ा थोड़ा खाना और पानी निकाला था तो वोह दूसरे खानों और पानी में डाल दीजिये)

खाने की दा'वत की अहम एह़तियात़

जब भी आप के यहां नियाज़ या किसी क़िस्म की तक़रीब हो, जमाअ़त का वक़्त होते ही कोई मानेए़ शर–ई न हो तो इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ तमाम मेहमानों समेत नमाज़े बा जमाअ़त के लिये मस्जिद का रुख़ कीजिये । बल्कि ऐसे अवक़ात में दा'वत ही मत रखिये कि बीच में नमाज़ आए और सुस्ती के बाइ़स مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जमाअ़त फ़ौत हो जाए । दो पहर के खाने के लिये बा'द नमाज़े ज़ोहर और शाम के खाने के लिये बा'द नमाज़े इ़शा मेहमानों को बुलाने में ग़ालिबन बा जमाअ़त नमाज़ों के लिये आसानी है । मेज़बान, बावर्ची, खाना तक़्सीम करने वाले वग़ैरा सभी को चाहिये कि जूं ही नमाज़ का वक़्त हो, सारा काम छोड़ कर बा जमाअ़त नमाज़ का एहतिमाम करें । बुज़ुर्गों की ''नियाज़ की दा'वत'' की मसरूफ़िय्यत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ''नमाज़े बा जमाअ़त'' में कोताही बहुत बड़ी मा'सियत है ।

मज़ार पर ह़ाज़िरी का त़रीक़ा

बुज़ुर्गों की ज़ाहिरी ज़िन्दगी में भी क़दमों की त़रफ़ से या'नी चेहरे के सामने से ह़ाज़िर होना चाहिये, पीछे से आने की सूरत में उन्हें मुड़ कर देखने की ज़ह़मत होती है। लिहाज़ा बुज़ुर्गाने दीन के मज़ारात पर भी **पाइंती** (या'नी क़दमों) की त़रफ़ से ह़ाज़िर हो कर फिर क़िब्ले को पीठ और साह़िबे मज़ार के चेहरे की त़रफ़ रुख़ कर के कम अज़ कम चार हाथ (या'नी तक़रीबन दो गज़) दूर खड़ा हो और इस त़रह़ सलाम अ़र्ज़ करे :

اَلسَّلَامُ عَلَيكَ يا سَيِّدِیْ وَرَحمةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ۔

एक बार **सू-रतुल फ़ातिहा** और 11 बार **सू-रतुल इख़्लास** (अव्वल आख़िर एक या तीन बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर हाथ उठा कर ऊपर दिये हुए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ (साह़िबे मज़ार का नाम ले कर भी) ईसाले सवाब करे और दुआ़ मांगे। "**अह़्सनुल विआ़अ**" में है : वली के मज़ार के पास दुआ़ क़बूल होती है।

(माख़ूज़ अज़ अह़्सनुल विआ़अ, स. 140)

इलाही वासित़ा कुल औलिया का   मेरा हर एक पूरा मुद्दआ़ हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी । (مجمع الزوائد)

फ़ेहरिस

ماٰخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرانِ مجید	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	الکامل	دارالکتب العلمیۃ بیروت
ابوداود	داراحیاء التراث العربی بیروت	التذکرۃ	دارالسلام مصر
دارقطنی	مدینۃ الاولیاء ملتان شریف	شرح الصدور	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند
معجم اوسط	دارالکتب العلمیۃ بیروت	احسن الوعاء	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
شعب الایمان	دارالکتب العلمیۃ بیروت	فتاوٰی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
نوادر الاصول	مکتبۃ الامام البخاری	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
مسند الشامیین	مؤسسۃ الرسالۃ بیروت	حدائق بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
جمع الجوامع	دارالکتب العلمیۃ بیروت	وسائل بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अरबों नेकियां कमाने का आसान नुस्ख़ा मिल गया !

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم **: जो कोई तमाम मोमिन मर्दों और औरतों के लिये दुआए मग्फ़िरत करता है, अल्लाह** عزوجل **उस के लिये हर मोमिन मर्द व औरत के इवज़ एक नेकी लिख देता है।** (مسند الشامیین للطبرانی ج ۳ ص ۲۳۴ حدیث ۲۱۵۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! झूम जाइये ! अरबों, खरबों नेकियां कमाने का **आसान नुस्ख़ा** हाथ आ गया ! ज़ाहिर है इस वक़्त रूए ज़मीन पर करोड़ों मुसल्मान मौजूद हैं और करोड़ों बल्कि अरबों दुन्या से चल बसे हैं। अगर हम सारी उम्मत की मग्फ़िरत के लिये दुआ करेंगे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عزوجل हमें अरबों, खरबों नेकियों का ख़ज़ाना मिल जाएगा। मैं अपने लिये और तमाम मुअमिनीन व मुअमिनात के लिये दुआ तहरीर कर देता हूं। (अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये) اِنْ شَآءَ اللّٰه عزوجل ढेरों नेकियां हाथ आएंगी।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَلِكُلِّ مُؤْمِنٍ وَّمُؤْمِنَةٍ ۔ या'नी ऐ अल्लाह ! मेरी और हर मोमिन व मोमिना की मग्फ़िरत फ़रमा।

اٰمِیْن بِجَاهِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم

आप भी ऊपर दी हुई दुआ को अ़-रबी या उर्दू या दोनों ज़बानों में अभी और हो सके तो रोज़ाना पांचों नमाज़ों के बा'द भी पढ़ने की आदत बना लीजिये।

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

مکتبة المدینة

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net